



आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF

38 आरतियाँ एक ही PDF में — बड़े, साफ़ अक्षरों में, पूजा, प्रिंट और मोबाइल के लिए।

www.MandirTheTemple.com



www.MandirTheTemple.com

[@MandirTheTemple](https://www.instagram.com/MandirTheTemple)

[YouTube: @MandirTheTemple](https://www.youtube.com/@MandirTheTemple)

[Facebook: /MandirTheTemple](https://www.facebook.com/MandirTheTemple)



सभी PDF
QR स्कैन करें



अनुक्रमणिका

1. ॐ जय जगदीश हरे
2. जय अम्बे गौरी आरती
3. हनुमान जी की आरती
4. आरती कुंज बिहारी की
5. ॐ जय शिव ओमकारा
6. ॐ जय लक्ष्मी माता आरती
7. जय गणेश देवा आरती
8. श्री सत्यनारायण जी की आरती
9. शनि देव की आरती
10. सूर्य देव की आरती
11. तुलसी माता की आरती
12. गंगा मैया की आरती
13. श्री बृहस्पति देव की आरती
14. श्री कुबेर जी की आरती
15. भैरव जी की आरती
16. विश्वकर्मा जी की आरती
17. सरस्वती माता की आरती
18. शीतला माता की आरती
19. अहोई माता की आरती
20. आरती युगलकिशोर की कीजै
21. अन्नपूर्णा माता की आरती
22. श्री चित्रगुप्त जी की आरती
23. एकादशी माता की आरती
24. पार्वती माता की आरती
25. नरसिंह भगवान की आरती
26. श्री जानकीनाथ जी की आरती
27. सुन मेरी देवी पर्वतवासनी
28. श्री रामायण जी की आरती
29. श्री बद्रीनाथ जी की आरती
30. ॐ जय गंगाधर आरती
31. श्री राम स्तुति
32. गगन मै थालु
33. सुखकर्ता दुःखहर्ता आरती
34. शेंदुर लाल चढ़ायो आरती
35. दत्ताची आरती
36. जय जय त्र्यंबकराज गिरिजानाथा
37. संत तुकाराम आरती
38. लवथवती विक्राळा





1. ॐ जय जगदीश हरे

Om Jai Jagdish Hare Aarti

ॐ जय जगदीश हरे,
स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट,
दास जनों के संकट,
क्षण में दूर करे ॥
॥ ॐ जय जगदीश हरे.. ॥

जो ध्यावे फल पावे,
दुःख बिनसे मन का,
स्वामी दुःख बिनसे मन का ।
सुख सम्पति घर आवे,
सुख सम्पति घर आवे,
कष्ट मिटे तन का ॥
॥ ॐ जय जगदीश हरे.. ॥

मात पिता तुम मेरे,
शरण गहूं किसकी,
स्वामी शरण गहूं मैं किसकी ।
तुम बिन और न दूजा,
तुम बिन और न दूजा,
आस करूं मैं जिसकी ॥
॥ ॐ जय जगदीश हरे.. ॥





ॐ जय जगदीश हरे (जारी)

तुम पूरण परमात्मा,
तुम अन्तर्यामी,
स्वामी तुम अन्तर्यामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर,
पारब्रह्म परमेश्वर,
तुम सब के स्वामी ॥
॥ ॐ जय जगदीश हरे.. ॥

तुम करुणा के सागर,
तुम पालनकर्ता,
स्वामी तुम पालनकर्ता ।
मैं मूरख फलकामी,
मैं सेवक तुम स्वामी,
कृपा करो भर्ता॥
॥ ॐ जय जगदीश हरे.. ॥

तुम हो एक अगोचर,
सबके प्राणपति,
स्वामी सबके प्राणपति ।
किस विधि मिलूं दयामय,
किस विधि मिलूं दयामय,
तुमको मैं कुमति ॥
॥ ॐ जय जगदीश हरे.. ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

ॐ जय जगदीश हरे (जारी)

दीन-बन्धु दुःख-हर्ता,
ठाकुर तुम मेरे,
स्वामी रक्षक तुम मेरे ।
अपने हाथ उठाओ,
अपने शरण लगाओ,
द्वार पड़ा तेरे ॥
॥ ॐ जय जगदीश हरे.. ॥

विषय-विकार मिटाओ,
पाप हरो देवा,
स्वामी पाप(कष्ट) हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ,
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ,
सन्तन की सेवा ॥

ॐ जय जगदीश हरे,
स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट,
दास जनों के संकट,
क्षण में दूर करे ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



2. जय अम्बे गौरी आरती

Jai Ambe Gauri Aarti

जय अम्बे गौरी,
मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशदिन ध्यावत,
हरि ब्रह्मा शिवरी ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

मांग सिंदूर विराजत,
टीको मृगमद को ।
उज्ज्वल से दोउ नैना,
चंद्रवदन नीको ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

कनक समान कलेवर,
रक्ताम्बर राजै ।
रक्तपुष्प गल माला,
कंठन पर साजै ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

जय अम्बे गौरी आरती (जारी)

केहरि वाहन राजत,
खड़ग खप्पर धारी ।
सुर-नर-मुनिजन सेवत,
तिनके दुखहारी ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

कानन कुण्डल शोभित,
नासाग्रे मोती ।
कोटिक चंद्र दिवाकर,
सम राजत ज्योती ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

शुंभ-निशुंभ बिदारे,
महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैना,
निशदिन मदमाती ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

चण्ड-मुण्ड संहारे,
शोणित बीज हरे ।
मधु-कैटभ दोउ मारे,
सुर भयहीन करे ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

जय अम्बे गौरी आरती (जारी)

ब्रह्माणी, रूद्राणी,
तुम कमला रानी ।
आगम निगम बखानी,
तुम शिव पटरानी ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

चौंसठ योगिनी मंगल गावत,
नृत्य करत भैरों ।
बाजत ताल मृदंगा,
अरू बाजत डमरू ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

तुम ही जग की माता,
तुम ही हो भरता,
भक्तन की दुख हरता ।
सुख संपत्ति करता ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

भुजा चार अति शोभित,
वर मुद्रा धारी । [खड्ग खप्पर धारी]
मनवांछित फल पावत,
सेवत नर नारी ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

जय अम्बे गौरी आरती (जारी)

कंचन थाल विराजत,
अगर कपूर बाती ।
श्रीमालकेतु में राजत,
कोटि रतन ज्योती ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

श्री अंबेजी की आरति,
जो कोइ नर गावे ।
कहत शिवानंद स्वामी,
सुख-संपत्ति पावे ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥
जय अम्बे गौरी,
मैया जय श्यामा गौरी ।



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



3. हनुमान जी की आरती

Hanuman Ji Ki Aarti

॥ श्री हनुमंत स्तुति ॥
मनोजवं मारुत तुल्यवेगं,
जितेन्द्रियं, बुद्धिमतां वरिष्ठम् ॥
वातात्मजं वानरयुथ मुख्यं,
श्रीरामदुतं शरणम प्रपद्ये ॥

॥ आरती ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

जाके बल से गिरवर काँपे ।
रोग-दोष जाके निकट न झाँके ॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई ।
संतन के प्रभु सदा सहाई ॥
आरती कीजै हनुमान लला की ॥

दे वीरा रघुनाथ पठाए ।
लंका जारि सिया सुधि लाये ॥
लंका सो कोट समुद्र सी खाई ।
जात पवनसुत बार न लाई ॥
आरती कीजै हनुमान लला की ॥





हनुमान जी की आरती (जारी)

लंका जारि असुर संहारे ।
सियाराम जी के काज सँवारे ॥
लक्ष्मण मुर्छित पड़े सकारे ।
लाये संजिवन प्राण उबारे ॥
आरती कीजै हनुमान लला की ॥

पैठि पताल तोरि जमकारे ।
अहिरावण की भुजा उखारे ॥
बाई भुजा असुर दल मारे ।
दाहिने भुजा संतजन तारे ॥
आरती कीजै हनुमान लला की ॥

सुर-नर-मुनि जन आरती उतरें ।
जय जय जय हनुमान उचारें ॥
कंचन थार कपूर लौ छाई ।
आरती करत अंजना माई ॥
आरती कीजै हनुमान लला की ॥

जो हनुमानजी की आरती गावे ।
बसहिं बैकुंठ परम पद पावे ॥
लंक विध्वंस किये रघुराई ।
तुलसीदास स्वामी कीर्ति गाई ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com



हनुमान जी की आरती (जारी)

आरती कीजै हनुमान लला की ।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥
॥ इति संपूर्णम् ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



4. आरती कुंज बिहारी की

Aarti Kunj Bihari Ki

आरती कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥
आरती कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

गले में बैजंती माला,
बजावै मुरली मधुर बाला ।
श्रवण में कुण्डल झलकाला,
नंद के आनंद नंदलाला ।
गगन सम अंग कांति काली,
राधिका चमक रही आली ।
लतन में ठाढ़े बनमाली
भ्रमर सी अलक,
कस्तूरी तिलक,
चंद्र सी झलक,
ललित छवि श्यामा प्यारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥
आरती कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥





आरती कुंज बिहारी की (जारी)

कनकमय मोर मुकुट बिलसै,
देवता दरसन को तरसैं ।
गगन सों सुमन रासि बरसै ।
बजे मुरचंग,
मधुर मिरदंग,
ग्वालिन संग,
अतुल रति गोप कुमारी की,
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥
आरती कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

जहां ते प्रकट भई गंगा,
सकल मन हारिणि श्री गंगा ।
स्मरन ते होत मोह भंगा
बसी शिव सीस,
जटा के बीच,
हरै अघ कीच,
चरन छवि श्रीबनवारी की,
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥
आरती कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

आरती कुंज बिहारी की (जारी)

चमकती उज्ज्वल तट रेनू,
बज रही वृंदावन बेनू ।
चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू
हंसत मृदु मंद,
चांदनी चंद,
कटत भव फंद,
टेर सुन दीन दुखारी की,
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥
आरती कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

आरती कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥
आरती कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



5. ॐ जय शिव ओमकारा

Om Jai Shiv Omkara Aarti

ॐ जय शिव ओमकारा, हर हर शिव ओमकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्धांगी धारा॥
ॐ जय शिव ओमकारा, हर हर शिव ओमकारा ॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजे॥
ॐ जय शिव ओमकारा, हर हर शिव ओमकारा ॥

दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज अति सोहे।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे॥
ॐ जय शिव ओमकारा, हर हर शिव ओमकारा ॥

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी।
चंदन मृगमद सोहे भोले शुभकारी॥
ॐ जय शिव ओमकारा, हर हर शिव ओमकारा ॥

श्वेतांबर पीतांबर बाघंबर अंगे।
सनकादिक गरुड़ादिक भूतादिक संगे॥
ॐ जय शिव ओमकारा, हर हर शिव ओमकारा ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

ॐ जय शिव ओमकारा (जारी)

कर के मध्य कमंडलु चक्र त्रिशूल धर्ता।
जगकर्ता जगभर्ता जगसंहारकर्ता॥
ॐ जय शिव ओमकारा, हर हर शिव ओमकारा ॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर मध्ये ये तीनों एका॥
ॐ जय शिव ओमकारा, हर हर शिव ओमकारा ॥

त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी मनवांछित फल पावे॥
ॐ जय शिव ओमकारा, हर हर शिव ओमकारा ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



6. ॐ जय लक्ष्मी माता आरती

Om Jai Laxmi Mata Aarti

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशदिन सेवत, हरि विष्णु विधाता ॥
॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता ।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥
॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥

दुर्गा रूप निरंजनी, सुख-सम्पत्ति दाता ।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता ॥
॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥

तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता ।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता ॥
॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥

जिस घर में तुम रहतीं, सब सद्गुण आता ।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता ॥
॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

ॐ जय लक्ष्मी माता आरती (जारी)

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता ।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ॥
॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥

शुभ-गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ॥
॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥

महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥
॥ ॐ जय लक्ष्मी माता ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



7. जय गणेश देवा आरती

Jai Ganesh Deva Aarti

जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥
॥ जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ॥



एक दन्त दयावन्त, चार भुजा धारी ।
माथे सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी ॥
॥ जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ॥



पान चढ़े फल चढ़े, और चढ़े मेवा ।
लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करें सेवा ॥
॥ जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ॥



अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया ।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ॥
॥ जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ॥



‘सूर’ श्याम शरण आए, सफल कीजे सेवा ।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥
॥ जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF · MandirTheTemple.com

जय गणेश देवा आरती (जारी)

दीनन की लाज रखो, शम्भु सुतकारी ।
कामना को पूर्ण करो, जाऊँ बलिहारी ॥
॥ जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



8. श्री सत्यनारायण जी की आरती

Satyanarayan Ji Ki Aarti

जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।

सत्यनारायण स्वामी, जन पातक हरणा॥

ॐ जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा ।

रत्न जड़ित सिंहासन, अद्भुत छवि राजै।

नारद करत निराजन, घण्टा ध्वनि बाजै॥

ॐ जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा ।

प्रकट भये कलि कारण, द्विज को दर्श दियो।

बूढ़ा ब्राह्मण बनकर, कंचन महल कियो॥

ॐ जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा ।

दुर्बल भील कठारो, जिन पर कृपा करी।

चन्द्रचूड़ एक राजा, तिनकी विपत्ति हरी॥

ॐ जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा ।

वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्ही।

सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर स्तुति कीन्हीं॥

ॐ जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा ।





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

श्री सत्यनारायण जी की आरती (जारी)

भाव भक्ति के कारण, छिन-छिन रूप धरयो।
श्रद्धा धारण कीन्हीं, तिनको काज सरयो॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा ।

ग्वाल-बाल संग राजा, वन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हों, दीनदयाल हरी॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा ।

चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल, मेवा।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्यदेवा॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा ।

श्री सत्यनारायण जी की आरती, जो कोई नर गावै।
ऋद्धि-सिद्धि सुख-संपत्ति, सहज रूप पावै॥
जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन पातक हरणा॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



9. शनि देव की आरती

Shani Dev Ki Aarti

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी।
सूरज के पुत्र प्रभु छाया महतारी॥
॥ जय जय श्री शनिदेव... ॥

श्याम अंक वक्र दृष्ट चतुर्भुजा धारी।
नीलाम्बर धार नाथ गज की असवारी॥
॥ जय जय श्री शनिदेव... ॥

क्रीट मुकुट शीश राजित दिपत है लिलारी।
मुक्तन की माला गले शोभित बलिहारी॥
॥ जय जय श्री शनिदेव... ॥

मोदक मिष्ठान पान चढ़त हैं सुपारी।
लोहा तिल तेल उड़द महिषी अति प्यारी॥
॥ जय जय श्री शनिदेव... ॥

देव दनुज ऋषि मुनि सुमिरत नर नारी।
विश्वनाथ धरत ध्यान शरण हैं तुम्हारी॥
॥ जय जय श्री शनिदेव... ॥





10. सूर्य देव की आरती

Surya Dev Ki Aarti

ॐ जय कश्यप नन्दन, प्रभु जय अदिति नन्दन।
त्रिभुवन तिमिर निकंदन, भक्त हृदय चन्दन॥
॥ ॐ जय कश्यप... ॥

सप्त अश्वरथ राजित, एक चक्रधारी।
दुःखहारी, सुखकारी, मानस मलहारी॥
॥ ॐ जय कश्यप... ॥

सुर मुनि भूसुर वन्दित, विमल विभवशाली।
अघ-दल-दलन दिवाकर, दिव्य किरण माली॥
॥ ॐ जय कश्यप... ॥

सकल सुकर्म प्रसविता, सविता शुभकारी।
विश्व विलोचन मोचन, भव-बंधन भारी॥
॥ ॐ जय कश्यप... ॥

कमल समूह विकासक, नाशक त्रय तापा।
सेवत सहज हरत अति, मनसिज संतापा॥
॥ ॐ जय कश्यप... ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

सूर्य देव की आरती (जारी)

नेत्र व्याधि हर सुरवर, भू-पीड़ा हारी।
वृष्टि विमोचन संतत, परहित व्रतधारी॥
॥ ॐ जय कश्यप... ॥

सूर्यदेव करुणाकर, अब करुणा कीजै।
हर अज्ञान मोह सब, तत्त्वज्ञान दीजै॥
ॐ जय कश्यप नन्दन, प्रभु जय अदिति नन्दन।
त्रिभुवन तिमिर निकंदन, भक्त हृदय चन्दन॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



11. तुलसी माता की आरती

Tulsi Mata Ki Aarti

जय जय तुलसी माता, मैया जय तुलसी माता।
सब जग की सुख दाता, सबकी वर माता॥
॥ जय तुलसी माता... ॥

सब योगों से ऊपर, सब रोगों से ऊपर।
रज से रक्ष करके, सबकी भव त्राता॥
॥ जय तुलसी माता... ॥

बटु पुत्री है श्यामा, सूर बल्ली है ग्राम्या।
विष्णुप्रिय जो नर तुमको सेवे, सो नर तर जाता॥
॥ जय तुलसी माता... ॥

हरि के शीश विराजत, त्रिभुवन से हो वंदित।
पतित जनों की तारिणी, तुम हो विख्याता॥
॥ जय तुलसी माता... ॥

लेकर जन्म विजन में, आई दिव्य भवन में।
मानव लोक तुम्हीं से, सुख-संपत्ति पाता॥
॥ जय तुलसी माता... ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

तुलसी माता की आरती (जारी)

हरि को तुम अति प्यारी, श्याम वर्ण सुकुमारी।

प्रेम अजब है उनका, तुमसे कैसा नाता॥

हमारी विपद हरो तुम, कृपा करो माता॥

॥ जय तुलसी माता... ॥

जय जय तुलसी माता, मैया जय तुलसी माता।

सब जग की सुख दाता, सबकी वर माता॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



12. गंगा मैया की आरती

Ganga Maiya Ki Aarti

नमामि गंगे! तव पाद पंकजम्, सुरासुरैः वंदित दिव्य रूपम्।
भक्तिम् मुक्तिं च ददासि नित्यं, भावानुसारेण सदा नराणाम्॥
हर हर गंगे, जय माँ गंगे, हर हर गंगे, जय माँ गंगे॥
ॐ जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता॥

चंद्र सी जोत तुम्हारी, जल निर्मल आता।
शरण पड़ें जो तेरी, सो नर तर जाता॥
॥ ॐ जय गंगे माता... ॥

पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता॥
॥ ॐ जय गंगे माता... ॥

एक ही बार जो तेरी, शरणागति आता।
यम की त्रास मिटा कर, परमगति पाता॥
॥ ॐ जय गंगे माता... ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

गंगा मैया की आरती (जारी)

आरती मात तुम्हारी, जो जन नित्य गाता।

दास वही सहज में, मुक्ति को पाता॥

॥ ॐ जय गंगे माता... ॥

ॐ जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता।

जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



13. श्री बृहस्पति देव की आरती

Shri Brihaspati Dev Ki Aarti

जय बृहस्पति देवा, ॐ जय बृहस्पति देवा।
छिन छिन भोग लगाऊँ, कदली फल मेवा॥
ॐ जय बृहस्पति देवा, जय बृहस्पति देवा ॥

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
जगतपिता जगदीश्वर, तुम सबके स्वामी॥
ॐ जय बृहस्पति देवा, जय बृहस्पति देवा ॥

चरणामृत निज निर्मल, सब पातक हर्ता।
सकल मनोरथ दायक, कृपा करो भर्ता॥
ॐ जय बृहस्पति देवा, जय बृहस्पति देवा ॥

तन, मन, धन अर्पण कर, जो जन शरण पड़े।
प्रभु प्रकट तब होकर, आकर द्वार खड़े॥
ॐ जय बृहस्पति देवा, जय बृहस्पति देवा ॥

दीनदयाल दयानिधि, भक्तन हितकारी।
पाप दोष सब हर्ता, भव बंधन हारी॥
ॐ जय बृहस्पति देवा, जय बृहस्पति देवा ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

श्री बृहस्पति देव की आरती (जारी)

सकल मनोरथ दायक, सब संशय हारो।
विषय विकार मिटाओ, संतन सुखकारी॥
ॐ जय बृहस्पति देवा, जय बृहस्पति देवा ॥

जो कोई आरती तेरी, प्रेम सहित गावे।
जेठानन्द आनन्दकर, सो निश्चय पावे॥
ॐ जय बृहस्पति देवा, जय बृहस्पति देवा ॥

सब बोलो विष्णु भगवान की जय।
बोलो बृहस्पतिदेव भगवान की जय॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



14. श्री कुबेर जी की आरती

Shri Kuber Ji Ki Aarti

ॐ जय यक्ष कुबेर हरे,
स्वामी जय यक्ष जय यक्ष कुबेर हरे।
शरण पड़े भगतों के,
भण्डार कुबेर भरे॥

॥ ॐ जय यक्ष कुबेर हरे... ॥

शिव भक्तों में भक्त कुबेर बड़े,
स्वामी भक्त कुबेर बड़े।
दैत्य दानव मानव से,
कई-कई युद्ध लड़े॥

॥ ॐ जय यक्ष कुबेर हरे... ॥

स्वर्ण सिंहासन बैठे,
सिर पर छत्र फिरे,
स्वामी सिर पर छत्र फिरे।
योगिनी मंगल गावैं,
सब जय जय कार करैं॥
॥ ॐ जय यक्ष कुबेर हरे... ॥





श्री कुबेर जी की आरती (जारी)

गदा त्रिशूल हाथ में,
शस्त्र बहुत धरे,
स्वामी शस्त्र बहुत धरे।
दुख भय संकट मोचन,
धनुष टंकार करें॥
॥ ॐ जय यक्ष कुबेर हरे... ॥

भांति भांति के व्यंजन बहुत बने,
स्वामी व्यंजन बहुत बने।
मोहन भोग लगावें,
साथ में उड़द चने॥
॥ ॐ जय यक्ष कुबेर हरे... ॥

बल बुद्धि विद्या दाता,
हम तेरी शरण पड़े,
स्वामी हम तेरी शरण पड़े।
अपने भक्त जनों के,
सारे काम संवारे॥
॥ ॐ जय यक्ष कुबेर हरे... ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

श्री कुबेर जी की आरती (जारी)

मुकुट मणी की शोभा,
मोतियन हार गले,
स्वामी मोतियन हार गले।
अगर कपूर की बाती,
घी की जोत जले॥

॥ ॐ जय यक्ष कुबेर हरे... ॥

यक्ष कुबेर जी की आरती,
जो कोई नर गावे,
स्वामी जो कोई नर गावे।
कहत प्रेमपाल स्वामी,
मनवांछित फल पावे॥

॥ ॐ जय यक्ष कुबेर हरे... ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



15. भैरव जी की आरती

Bhairav Ji Ki Aarti

जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा।
जय काली और गौरा देवी कृत सेवा॥
॥ जय भैरव देवा... ॥

तुम्हीं पाप उद्धारक दुःख सिन्धु तारक।
भक्तों के सुख कारक भीषण वपु धारक॥
॥ जय भैरव देवा... ॥

वाहन श्वान विराजत कर त्रिशूल धारी।
महिमा अमित तुम्हारी जय जय भयहारी॥
॥ जय भैरव देवा... ॥

तुम बिन देवा सेवा सफल नहीं होवे।
चौमुख दीपक दर्शन दुःख सगरे खोवे॥
॥ जय भैरव देवा... ॥

तेल चटकि दधि मिश्रित भाषावलि तेरी।
कृपा करिए भैरव, करिए नहीं देरी॥
॥ जय भैरव देवा... ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

भैरव जी की आरती (जारी)

पाँव घुँघरू बाजत अरु डमरू डमकावत।
बटुकनाथ बन बालक जन मन हरषावत॥
॥ जय भैरव देवा... ॥

बटुकनाथ जी की आरती जो कोई नर गावे।
कहे धरणीधर नर मनवांछित फल पावे॥
॥ जय भैरव देवा... ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



16. विश्वकर्मा जी की आरती

Vishwakarma Ji Ki Aarti

ॐ जय श्री विश्वकर्मा, प्रभु जय श्री विश्वकर्मा।
सकल सृष्टि के कर्ता, रक्षक स्तुति धर्मा॥
॥ ॐ जय श्री विश्वकर्मा... ॥

आदि सृष्टि में विधि को, श्रुति उपदेश दिया।
जीव मात्र का जग में, ज्ञान विकास किया॥
॥ ॐ जय श्री विश्वकर्मा... ॥

ऋषि अंगिरा तप से, शांति नहीं पाई।
ध्यान किया जब प्रभु का, सकल सिद्धि आई॥
॥ ॐ जय श्री विश्वकर्मा... ॥

रोग ग्रस्त राजा ने, जब आश्रय लीना।
संकट मोचन बनकर, दूर दुःख कीना॥
॥ ॐ जय श्री विश्वकर्मा... ॥

जब रथकार दंपति, तुम्हरी टेर करी।
सुनकर दीन प्रार्थना, विपत हरी सगरी॥
॥ ॐ जय श्री विश्वकर्मा... ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

विश्वकर्मा जी की आरती (जारी)

एकानन चतुरानन, पंचानन राजे।
द्विभुज चतुर्भुज दशभुज, सकल रूप साजे॥
॥ ॐ जय श्री विश्वकर्मा... ॥

ध्यान धरे जब पद का, सकल सिद्धि आवे।
मन दुविधा मिट जावे, अटल शक्ति पावे॥
॥ ॐ जय श्री विश्वकर्मा... ॥

श्री विश्वकर्मा जी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत गजानंद स्वामी, सुख संपत्ति पावे॥
॥ ॐ जय श्री विश्वकर्मा... ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



17. सरस्वती माता की आरती

Saraswati Mata Ki Aarti

जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता।

सदगुण वैभव शालिनी, त्रिभुवन विख्याता॥

॥ जय जय सरस्वती माता... ॥

चन्द्रवदनि पद्मासिनि, द्युति मंगलकारी।

सोहे शुभ हंस सवारी, अतुल तेजधारी॥

॥ जय जय सरस्वती माता... ॥

बाएं कर में वीणा, दाएं कर माला।

शीश मुकुट मणि सोहे, गल मोतियन माला॥

॥ जय जय सरस्वती माता... ॥

देवी शरण जो आए, उनका उद्धार किया।

पैठी मंथरा दासी, रावण संहार किया॥

॥ जय जय सरस्वती माता... ॥

विद्या ज्ञान प्रदायिनि, ज्ञान प्रकाश भरो।
मोह अज्ञान और तिमिर का, जग से नाश करो॥

॥ जय जय सरस्वती माता... ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

सरस्वती माता की आरती (जारी)

धूप दीप फल मेवा, माँ स्वीकार करो।
ज्ञानचक्षु दे माता, जग निस्तार करो॥
॥ जय जय सरस्वती माता... ॥

माँ सरस्वती की आरती, जो कोई जन गावे।
हितकारी सुखकारी, ज्ञान भक्ति पावे॥
॥ जय जय सरस्वती माता... ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



18. शीतला माता की आरती

Sheetla Mata Ki Aarti

जय शीतला माता, मैया जय शीतला माता।

आदि ज्योति महारानी, सब फल की दाता॥

॥ ॐ जय शीतला माता... ॥

रतन सिंहासन शोभित, श्वेत छत्र भाता।
ऋद्धि-सिद्धि चँवर ढुलावें, जगमग छवि छाता॥

॥ ॐ जय शीतला माता... ॥

विष्णु सेवत ठाढ़े, सेवें शिव धाता।
वेद पुराण वरणत, पार नहीं पाता॥

॥ ॐ जय शीतला माता... ॥

इन्द्र मृदङ्ग बजावत, चन्द्र वीणा हाथा।
सूरज ताल बजावै, नारद मुनि गाता॥

॥ ॐ जय शीतला माता... ॥

घण्टा शङ्ख शहनाई, बाजै मन भाता।
करै भक्तजन आरती, लखि लखि हर्षाता॥

॥ ॐ जय शीतला माता... ॥





शीतला माता की आरती (जारी)

ब्रह्म रूप वरदानी, तुही तीन काल ज्ञाता।
भक्तन को सुख देती, मातु पिता भ्राता॥
॥ ॐ जय शीतला माता... ॥

जो जन ध्यान लगावे, प्रेम शक्ति पाता।
सकल मनोरथ पावे, भवनिधि तर जाता॥
॥ ॐ जय शीतला माता... ॥

रोगों से जो पीड़ित कोई, शरण तेरी आता।
कोढ़ी पावे निर्मल काया, अन्ध नेत्र पाता॥
॥ ॐ जय शीतला माता... ॥

बांझ पुत्र को पावे, दारिद्र कट जाता।
ताको भजै जो नाहीं, सिर धुनि पछताता॥
॥ ॐ जय शीतला माता... ॥

शीतल करती जननी, तू ही है जग त्राता।
उत्पत्ति व्याधि बिनाशन, तू सब की घाता॥
॥ ॐ जय शीतला माता... ॥

दास विचित्र कर जोड़े, सुन मेरी माता।
भक्ति आपनी दीजै, और न कुछ भाता॥
॥ ॐ जय शीतला माता... ॥





19. अहोई माता की आरती

Ahoi Mata Ki Aarti

जय अहोई माता, जय अहोई माता।
तुमको निसदिन ध्यावत, हर विष्णु विधाता॥
॥ ॐ जय अहोई माता... ॥

ब्रह्माणी, रुद्राणी, कमला, तू ही है जगमाता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥
॥ ॐ जय अहोई माता... ॥

माता रूप निरंजन, सुख-सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, नित मंगल पाता॥
॥ ॐ जय अहोई माता... ॥

तू ही पाताल बसंती, तू ही है शुभदाता।
कर्म-प्रभाव प्रकाशक, जगनिधि से त्राता॥
॥ ॐ जय अहोई माता... ॥

जिस घर थारो वासा, वाहि में गुण आता।
कर न सके सोई कर ले, मन नहीं घबराता॥
॥ ॐ जय अहोई माता... ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

अहोई माता की आरती (जारी)

तुम बिन सुख न होवे, न कोई पुत्र पाता।
खान-पान का वैभव, तुम बिन नहीं आता॥
॥ ॐ जय अहोई माता... ॥

शुभ गुण सुंदर युक्ता, क्षीर निधि जाता।
रतन चतुर्दश तोकू, कोई नहीं पाता॥
॥ ॐ जय अहोई माता... ॥

श्री अहोई माँ की आरती, जो कोई गाता।
उर उमंग अति उपजे, पाप उतर जाता॥
॥ ॐ जय अहोई माता... ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



20. आरती युगलकिशोर की कीजै

Yugal Kishore Aarti

आरती युगलकिशोर की कीजै।
तन मन धन न्योछावर कीजै॥

गौरश्याम मुख निरखन लीजै।
हरि का रूप नयन भरि पीजै॥
॥ आरती युगलकिशोर की कीजै... ॥

रवि शशि कोटि बदन की शोभा।
ताहि निरखि मेरो मन लोभा॥
॥ आरती युगलकिशोर की कीजै... ॥

ओढ़े नील पीत पट सारी।
कुंजबिहारी गिरिवरधारी॥
॥ आरती युगलकिशोर की कीजै... ॥

फूलन सेज फूल की माला।
रत्न सिंहासन बैठे नंदलाला॥
॥ आरती युगलकिशोर की कीजै... ॥

कंचन थार कपूर की बाती।
हरि आए निर्मल भई छाती॥
॥ आरती युगलकिशोर की कीजै... ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

आरती युगलकिशोर की कीजै (जारी)

श्री पुरुषोत्तम गिरिवरधारी।
आरती करें सकल नर नारी॥
॥ आरती युगलकिशोर की कीजै... ॥

नंदनंदन बृजभान किशोरी।
परमानंद स्वामी अविचल जोरी॥
॥ आरती युगलकिशोर की कीजै... ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



21. अन्नपूर्णा माता की आरती

Annapurna Mata Ki Aarti

बारम्बार प्रणाम, मैया बारम्बार प्रणाम ॥

जो नहिं ध्यावे तुम्हें अम्बिके, कहाँ उसे विश्राम।
अन्नपूर्णा देवी नाम तिहारो, लेत होत सब काम॥

बारम्बार प्रणाम, मैया बारम्बार प्रणाम ॥

प्रलय युगान्तर और जन्मान्तर, कालान्तर तक नाम।
सुर सुरों की रचना करती, कहाँ कृष्ण कहाँ राम॥

बारम्बार प्रणाम, मैया बारम्बार प्रणाम ॥

चूमहि चरण चतुर चतुरानन, चारु चक्रधर श्याम।
चंद्रचूड़ चन्द्रानन चाकर, शोभा लखहि ललाम॥

बारम्बार प्रणाम, मैया बारम्बार प्रणाम ॥

देवि देव! दयनीय दशा में, दया-दया तब नाम।
त्राहि-त्राहि शरणागत वत्सल, शरण रूप तब धाम॥

बारम्बार प्रणाम, मैया बारम्बार प्रणाम ॥

श्रीं, हीं श्रद्धा श्री ऐं विद्या, श्री क्लीं कमला काम।
कांति, भ्रांतिमयी, कांति शांतिमयी, वर दे तू निष्काम॥

बारम्बार प्रणाम, मैया बारम्बार प्रणाम ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF · MandirTheTemple.com



अन्नपूर्णा माता की आरती (जारी)

॥ माता अन्नपूर्णा की जय ॥



 www.MandirTheTemple.com

 Instagram: @MandirTheTemple

 YouTube: @MandirTheTemple

 Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



22. श्री चित्रगुप्त जी की आरती

Shri Chitrugupt Ji Ki Aarti

ॐ जय चित्रगुप्त हरे, स्वामी जय चित्रगुप्त हरे।
भक्तजनों के इच्छित, फल को पूर्ण करे॥

विघ्न विनाशक मंगलकर्ता, सन्तन सुखदायी।
भक्तों के प्रतिपालक, त्रिभुवन यश छायी॥
॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥

रूप चतुर्भुज, श्यामल मूरत, पीताम्बर राजै।
मातु इरावती, दक्षिणा, वाम अंग साजै॥
॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥

कष्ट निवारक, दुष्ट संहारक, प्रभु अंतर्यामी।
सृष्टि सम्हारन, जन दुःख हारन, प्रकट भये स्वामी॥
॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥

कलम, दवात, शंख, पत्रिका, कर में अति सोहै।
वैजयन्ती वनमाला, त्रिभुवन मन मोहै॥
॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥

विश्व न्याय का कार्य सम्भाला, ब्रह्मा हर्षाये।
कोटि कोटि देवता तुम्हारे, चरणन में धाये॥
॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥





श्री चित्रगुप्त जी की आरती (जारी)

नृप सुदास अरु भीष्म पितामह, याद तुम्हें कीन्हा।
वेग, विलम्ब न कीन्हौं, इच्छित फल दीन्हा॥
॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥

दारा, सुत, भगिनी, सब अपने स्वारथ के कर्ता।
जाऊँ कहाँ शरण में किसकी, तुम तज मैं भर्ता॥
॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥

बन्धु, पिता तुम स्वामी, शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥
॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥

जो जन चित्रगुप्त जी की आरती, प्रेम सहित गावैं।
चौरासी से निश्चित छूटैं, इच्छित फल पावैं॥
॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥

न्यायाधीश बैकुंठ निवासी, पाप पुण्य लिखते।
'नानक' शरण तिहारे, आस न दूजी करते॥
॥ ॐ जय चित्रगुप्त हरे... ॥





23. एकादशी माता की आरती

Ekadashi Mata Ki Aarti

ॐ जय एकादशी, जय एकादशी, जय एकादशी माता।
विष्णु पूजा व्रत को धारण कर, शक्ति मुक्ति पाता॥

तेरे नाम गिनाऊं देवी, भक्ति प्रदान करनी।
गण गौरव की देनी माता, शास्त्रों में वरनी॥

॥ ॐ जय एकादशी... ॥

मार्गशीर्ष के कृष्णपक्ष की उत्पन्ना, विश्वतारनी जन्मी।
शुक्ल पक्ष में हुई मोक्षदा, मुक्तिदाता बन आई॥

॥ ॐ जय एकादशी... ॥

पौष के कृष्णपक्ष की, सफला नामक है।
शुक्लपक्ष में होय पुत्रदा, आनन्द अधिक रहै॥

॥ ॐ जय एकादशी... ॥

नाम षटतिला माघ मास में, कृष्णपक्ष आवै।
शुक्लपक्ष में जया, कहावै, विजय सदा पावै॥

॥ ॐ जय एकादशी... ॥

विजया फागुन कृष्णपक्ष में शुक्ला आमलकी।
पापमोचनी कृष्ण पक्ष में, चैत्र महाबलि की॥

॥ ॐ जय एकादशी... ॥





एकादशी माता की आरती (जारी)

चैत्र शुक्ल में नाम कामदा, धन देने वाली।
नाम बरुथिनी कृष्णपक्ष में, वैसाख माह वाली॥
॥ ॐ जय एकादशी... ॥

शुक्ल पक्ष में होय मोहिनी अपरा ज्येष्ठ कृष्णपक्षी।
नाम निर्जला सब सुख करनी, शुक्लपक्ष रखी॥
॥ ॐ जय एकादशी... ॥

योगिनी नाम आषाढ में जानों, कृष्णपक्ष करनी।
देवशयनी नाम कहायो, शुक्लपक्ष धरनी॥
॥ ॐ जय एकादशी... ॥

कामिका श्रावण मास में आवै, कृष्णपक्ष कहिए।
श्रावण शुक्ला होय पवित्रा आनन्द से रहिए॥
॥ ॐ जय एकादशी... ॥

अजा भाद्रपद कृष्णपक्ष की, परिवर्तिनी शुक्ला।
इन्द्रा आश्विन कृष्णपक्ष में, व्रत से भवसागर निकला॥
॥ ॐ जय एकादशी... ॥

पापांकुशा है शुक्ल पक्ष में, आप हरनहारी।
रमा मास कार्तिक में आवै, सुखदायक भारी॥
॥ ॐ जय एकादशी... ॥





एकादशी माता की आरती (जारी)

देवोत्थानी शुक्लपक्ष की, दुखनाशक मैया।
पावन मास में करूं विनती पार करो नैया॥

॥ ॐ जय एकादशी... ॥

परमा कृष्णपक्ष में होती, जन मंगल करनी।
शुक्ल मास में होय पद्मिनी दुख दारिद्र हरनी॥

॥ ॐ जय एकादशी... ॥

जो कोई आरती एकादशी की, भक्ति सहित गावै।
जन गुरदिता स्वर्ग का वासा, निश्चय वह पावै॥

॥ ॐ जय एकादशी... ॥





24. पार्वती माता की आरती

Parvati Mata Ki Aarti

जय पार्वती माता, जय पार्वती माता।
ब्रह्मा सनातन देवी, शुभ फल की दाता॥

अरिकुल कंटक नासनि, निज सेवक त्राता।
जगजननी जगदम्बा, हरिहर गुण गाता॥
॥ जय पार्वती माता... ॥

सिंह को वाहन साजे, कुंडल है साथ।
देव वधू जस गावत, नृत्य करत ता था॥
॥ जय पार्वती माता... ॥

सतयुग रूप शील अतिसुंदर, नाम सती कहलाता।
हेमाचल घर जन्मी, सखियाँ संग राता॥
॥ जय पार्वती माता... ॥

शुम्भ निशुम्भ विदारे, हेमाचल स्थाता।
सहस्र भुजा तनु धरिके, चक्र लियो हाथा॥
॥ जय पार्वती माता... ॥

सृष्टि रूप तुही है जननी, शिव संग रंगराता।
नन्दी भृंगी बीन लही, सारा जग मदमाता॥
॥ जय पार्वती माता... ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

पार्वती माता की आरती (जारी)

देवन अरज करत हम, चरण ध्यान लाता।
तेरी कृपा रहे तो, मन नहीं भरमाता॥
॥ जय पार्वती माता... ॥

मैया जी की आरती, भक्ति भाव से जो नर गाता।
नित्य सुखी रह करके, सुख संपत्ति पाता॥
॥ जय पार्वती माता... ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



25. नरसिंह भगवान की आरती

Narsingh Bhagwan Ki Aarti

ॐ जय नरसिंह हरे, प्रभु जय नरसिंह हरे।
स्तंभ फाड़ प्रभु प्रकटे, स्तंभ फाड़ प्रभु प्रकटे,
जन का ताप हरे॥

तुम हो दीन दयाला, भक्तन हितकारी,
प्रभु भक्तन हितकारी।
अद्भुत रूप बनाकर, अद्भुत रूप बनाकर,
प्रकटे भय हारी॥

॥ ॐ जय नरसिंह हरे... ॥

सबके हृदय विदारण, दस्यु जियो मारी,
प्रभु दस्यु जियो मारी।
दास जान अपनायो, दास जान अपनायो,
जन पर कृपा करी॥

॥ ॐ जय नरसिंह हरे... ॥

ब्रह्मा करत आरती, माला पहिनावे,
प्रभु माला पहिनावे।
शिवजी जय जय कहकर, पुष्पन बरसावे॥
॥ ॐ जय नरसिंह हरे... ॥





26. श्री जानकीनाथ जी की आरती

Shri Jankinath Ji Ki Aarti

ॐ जय जानकीनाथा, जय श्री रघुनाथा।
दोउ कर जोरें बिनवौं, प्रभु! सुनिये बाता॥

तुम रघुनाथ हमारे, प्राण पिता माता।
तुम ही सज्जन-संगी, भक्ति मुक्ति दाता॥
॥ ॐ जय जानकीनाथा... ॥

लख चौरासी काटो, मेटो यम त्रासा।
निशदिन प्रभु मोहि रखिये, अपने ही पासा॥
॥ ॐ जय जानकीनाथा... ॥

राम भरत लछिमन, सँग शत्रुहन भैया।
जगमग ज्योति विराजै, शोभा अति लहिया॥
॥ ॐ जय जानकीनाथा... ॥

हनुमत नाद बजावत, नेवर झमकाता।
स्वर्णथाल कर आरती, करत कौशल्या माता॥
॥ ॐ जय जानकीनाथा... ॥

सुभग मुकुट सिर, धनु सर, कर शोभा भारी।
मनीराम दर्शन करि, पल-पल बलिहारी॥
॥ ॐ जय जानकीनाथा... ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

श्री जानकीनाथ जी की आरती (जारी)

जय जानकिनाथा, हो प्रभु जय श्री रघुनाथा।
हो प्रभु जय सीता माता, हो प्रभु जय लक्ष्मण भ्राता॥
॥ ॐ जय जानकीनाथा... ॥

हो प्रभु जय चारै भ्राता, हो प्रभु जय हनुमत दासा।
दोउ कर जोड़े विनवौं, प्रभु मेरी सुनो बाता॥
॥ ॐ जय जानकीनाथा... ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



27. सुन मेरी देवी पर्वतवासनी

Sun Meri Devi Parvat Vasani Aarti

सुन मेरी देवी पर्वतवासनी, कोई तेरा पार न पाया माँ ॥

पान सुपारी ध्वजा नारियल,
ले तेरी भेंट चढ़ायो माँ॥

सुन मेरी देवी पर्वतवासनी, कोई तेरा पार न पाया माँ ॥

सुवा चोली तेरी अंग विराजे,
केसर तिलक लगाया॥

सुन मेरी देवी पर्वतवासनी, कोई तेरा पार न पाया माँ ॥

नंगे पग माँ अकबर आया,
सोने का छत्र चढ़ाया॥

सुन मेरी देवी पर्वतवासनी, कोई तेरा पार न पाया माँ ॥

ऊँचे पर्वत बनायो देवालय,
नीचे शहर बसाया॥

सुन मेरी देवी पर्वतवासनी, कोई तेरा पार न पाया माँ ॥

सतयुग, द्वापर, त्रेता मध्ये,
कलियुग राज सवाया॥

सुन मेरी देवी पर्वतवासनी, कोई तेरा पार न पाया माँ ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

सुन मेरी देवी पर्वतवासनी (जारी)

धूप दीप नैवेद्य आरती,
मोहन भोग लगाया॥

सुन मेरी देवी पर्वतवासनी, कोई तेरा पार न पाया माँ ॥

ध्यानू भगत मैया तेरे गुन गाया,
मनवांछित फल पाया॥

सुन मेरी देवी पर्वतवासनी, कोई तेरा पार न पाया माँ ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



28. श्री रामायण जी की आरती

Shri Ramayan Ji Ki Aarti

आरती श्री रामायण जी की।
कीरति कलित ललित सिय पी की ॥

गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद।
बाल्मीकि बिग्यान बिसारद॥
शुक सनकादिक शेष अरु शारद।
बरनि पवनसुत कीरति नीकी॥
आरती श्री रामायण जी की।
कीरति कलित ललित सिय पी की ॥

गावत बेद पुरान अष्टदस।
छहों शास्त्र सब ग्रंथन को रस॥
मुनि जन धन संतन को सरबस।
सार अंश सम्मत सब ही की॥
आरती श्री रामायण जी की।
कीरति कलित ललित सिय पी की ॥





श्री रामायण जी की आरती (जारी)

गावत संतत शंभु भवानी।
अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी॥
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी।
कागभुशुंडि गरुड़ के ही की॥
आरती श्री रामायण जी की।
कीरति कलित ललित सिय पी की ॥

कलिमल हरनि बिषय रस फीकी।
सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की॥
दलनि रोग भव मूरि अमी की।
तात मातु सब बिधि तुलसी की॥
आरती श्री रामायण जी की।
कीरति कलित ललित सिय पी की ॥





29. श्री बद्रीनाथ जी की आरती

Shri Badrinath Aarti

पवन मंद सुगंध शीतल, हेम मंदिर शोभितम्।
निकट गंगा बहत निर्मल, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥

शेष सुमिरन करत निशदिन, धरत ध्यान महेश्वरम्।
वेद ब्रह्मा करत स्तुति, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥
॥ पवन मंद सुगंध शीतल... ॥

शक्ति गौरी गणेश शारद, नारद मुनि उच्चारणम्।
जोग ध्यान अपार लीला, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥
॥ पवन मंद सुगंध शीतल... ॥

इंद्र चंद्र कुबेर धुनि कर, धूप दीप प्रकाशितम्।
सिद्ध मुनिजन करत जय जय, बद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥
॥ पवन मंद सुगंध शीतल... ॥

यक्ष किन्नर करत कौतुक, ज्ञान गंधर्व प्रकाशितम्।
श्री लक्ष्मी कमला चंवरडोल, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥
॥ पवन मंद सुगंध शीतल... ॥

कैलाश में एक देव निरंजन, शैल शिखर महेश्वरम्।
राजयुधिष्ठिर करत स्तुति, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥
॥ पवन मंद सुगंध शीतल... ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

श्री बद्रीनाथ जी की आरती (जारी)

श्री बद्रीजी के पंच रत्न, पढ़त पाप विनाशनम्।
कोटि तीर्थ भवेत पुण्य, प्राप्यते फलदायकम्॥

॥ पवन मंद सुगंध शीतल... ॥

पवन मंद सुगंध शीतल, हेम मंदिर शोभितम्।
निकट गंगा बहत निर्मल, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

30. ॐ जय गंगाधर आरती

Om Jai Gangadhar Aarti

ॐ जय गंगाधर जय हर, जय गिरिजाधीशा।

त्वं मां पालय नित्यं, कृपया जगदीशा॥

॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

कैलासे गिरिशिखरे, कल्पद्रुमविपिने।

गुंजति मधुकरपुंजे, कुंजवने गहने॥

॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

कोकिलकूजित खेलत, हंसावन ललिता।

रचयति कलाकलापं, नृत्यति मुदसहिता॥

॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

तस्मिंल्ललितसुदेशे, शाला मणिरचिता।

तन्मध्ये हरनिकटे, गौरी मुदसहिता॥

क्रीडा रचयति, भूषारंचित निजमीशम्।

इंद्रादिक सुर सेवत, नामयते शीशम्॥

॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

ॐ जय गंगाधर आरती (जारी)

बिबुधबधू बहु नृत्यत, हृदये मुदसहिता।
किन्नर गायन कुरुते, सप्त स्वर सहिता॥
धिनकत थै थै धिनकत, मृदंग वादयते।
क्वण क्वण ललिता वेणुं, मधुरं नाटयते॥
॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

रुण रुण चरणे रचयति, नूपुरमुज्ज्वलिता।
चक्रावर्ते भ्रमयति, कुरुते तां धिक तां॥
॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

तां तां लुप चुप, तां तां डमरू वादयते।
अंगुष्ठांगुलिनादं, लासकतां कुरुते॥
॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

कर्पूरद्युतिगौरं, पञ्चाननसहितम्।
त्रिनयनशशिधरमौलिं, विषधरकण्ठयुतम्॥
॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

सुन्दरजटाकलापं, पावकयुतभालम्।
डमरुत्रिशूलपिनाकं, करधृतनृकपालम्॥
॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

ॐ जय गंगाधर आरती (जारी)

मुण्डै रचयति माला, पन्नगमुपवीतम्।
वामविभागे गिरिजा, रूपं अतिललितम्॥
॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

सुन्दरसकलशरीरे, कृतभस्माभरणम्।
इति वृषभध्वजरूपं, तापत्रयहरणम्॥
॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

शंखनिनादं कृत्वा, झल्लरि नादयते।
नीराजयते ब्रह्मा, वेदऋचां पठते॥
॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

अतिमृदुचरणसरोजं, हृत्कमले धृत्वा।
अवलोकयति महेशं, ईशं अभिनत्वा॥
॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

ध्यानं आरति समये, हृदये अति कृत्वा।
रामस्त्रिजटानाथं, ईशं अभिनत्वा॥
॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

संगतिमेवं प्रतिदिन, पठनं यः कुरुते।
शिवसायुज्यं गच्छति, भक्त्या यः शृणुते॥
॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



31. श्री राम स्तुति

Shri Ram Stuti

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणम्।
नवकंज लोचन कंज मुख, कर कंज पद कंजारुणम्॥ १॥

कन्दर्प अगणित अमित छवि, नवनील नीरद सुन्दरम्।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि शुचि, नौमि जनकसुतावरम्॥ २॥

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव, दैत्यवंश निकन्दनम्।
रघुनन्द आनन्दकन्द, कौशलचन्द दशरथनन्दनम्॥ ३॥

सिर मुकुट कुंडल तिलक, चारु उदारु अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शर चापधर, संग्रामजित खरदूषणम्॥ ४॥

इति वदति तुलसीदास, शंकर शेष मुनि मन रंजनम्।
मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खलदल गंजनम्॥ ५॥

मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो वरु, सहज सुंदर साँवरो।
करुणा निधान सुजान सीलु, सनेहु जानत रावरो॥

एहि भाँति गौरी असीस सुनि, सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि-पुनि, मुदित मन मंदिर चली॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

श्री राम स्तुति (जारी)

॥ सियावर रामचन्द्र की जय ॥

॥ पवनसुत हनुमान की जय ॥

॥ जय श्री राम ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

32. गगन मै थालु

Gagan Mai Thaal Aarti

धनासरी महला १ आरती
१६ सतिगुर प्रसादि॥

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती॥१॥

कैसी आरती होइ॥ भव खंडना तेरी आरती॥
अनहता सबद वाजंत भेरी॥१॥ रहाउ॥

सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही॥
सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही॥२॥

सभ महि जोति जोति है सोइ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ॥
गुर साखी जोति परगटु होइ॥
जो तिसु भावै सु आरती होइ॥३॥

हरि चरण कवल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा॥
क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नाइ वासा॥४॥३॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



33. सुखकर्ता दुःखहर्ता आरती

Sukhkarta Dukhharta Aarti

सुखकर्ता दुःखहर्ता वार्ता विघ्नाची।
नुरवी पुरवी प्रेम कृपा जयाची।
सर्वांगी सुंदर उटी शेंदुराची।
कंठी झळके माळ मुक्ताफळांची॥
जय देव जय देव जय मंगलमूर्ती।
दर्शनमात्रे मनःकामना पुरती ॥ जय देव जय देव ॥

रत्नखचित फरा तुज गौरीकुमरा।
चंदनाची उटी कुंकुमकेशरा।
हिरेजडित मुकुट शोभतो बरा।
रुणझुणती नूपुरे चरणी घागरिया॥
जय देव जय देव जय मंगलमूर्ती।
दर्शनमात्रे मनःकामना पुरती ॥ जय देव जय देव ॥

लंबोदर पीतांबर फणिवरबंधना।
सरळ सोड वक्रतुंड त्रिनयना।
दास रामाचा वाट पाहे सदना।
संकटी पावावे निर्वाणी रक्षावे सुखखंडना॥
जय देव जय देव जय मंगलमूर्ती।
दर्शनमात्रे मनःकामना पुरती ॥ जय देव जय देव ॥





34. शेंदुर लाल चढ़ायो आरती

Shendur Lal Chadhayo Aarti

शेंदुर लाल चढ़ायो अच्छा गजमुखको।

दोंदिल लाल बिराजे सुत गौरीहरको।

हाथ लिए गुडलडू साँई सुरवरको।

महिमा कहे न जाय लागत हूँ पदको॥

जय देव जय देव, जय जय श्री गणराज।

विद्या सुखदाता, धन्य तुम्हारा दर्शन, मेरा मन रमता ॥ जय देव जय देव ॥

अष्टौ सिद्धि दासी संकटको बैरी।

विघ्नविनाशन मंगल मूरत अधिकारी।

कोटीसूरजप्रकाश ऐसी छबि तेरी।

गंडस्थलमदमस्तक झूले शशिबिहारी॥

जय देव जय देव, जय जय श्री गणराज।

विद्या सुखदाता, धन्य तुम्हारा दर्शन, मेरा मन रमता ॥ जय देव जय देव ॥

भावभगत से कोई शरणागत आवे।

संतत संपत सबही भरपूर पावे।

ऐसे तुम महाराज मोको अति भावे।

गोसावीनंदन निशिदिन गुन गावे॥

जय देव जय देव, जय जय श्री गणराज।

विद्या सुखदाता, धन्य तुम्हारा दर्शन, मेरा मन रमता ॥ जय देव जय देव ॥





35. दत्ताची आरती

Datta Aarti

त्रिगुणात्मक त्रैमूर्ती दत्त हा जाणा।
त्रिगुणी अवतार त्रैलोक्य राणा।
नेती नेती शब्द न ये अनुमाना।
सुरवर मुनिजन योगी समाधी न ये ध्याना॥
जय देव जय देव जय श्री गुरुदत्ता।
आरती ओवाळितां हरली भवचिंता ॥ जय देव जय देव ॥



सबाह्य अभ्यंतरी तू एक दत्त।
अभाग्यासी केंची कळेल ही मात।
पराही परतली तेथें कैचा हेत।
जन्ममरणाचाही पुरलासे अंत॥
जय देव जय देव जय श्री गुरुदत्ता।
आरती ओवाळितां हरली भवचिंता ॥ जय देव जय देव ॥



दत्त येऊनियां उभा ठाकला।
भावे साष्टांगेंसी प्रणिपात केला।
प्रसन्न होऊनि आशीर्वाद दिधला।
जन्ममरणाचा फेरा चुकविला॥
जय देव जय देव जय श्री गुरुदत्ता।
आरती ओवाळितां हरली भवचिंता ॥ जय देव जय देव ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

दत्ताची आरती (जारी)

दत्त दत्त ऐसें लागलें ध्यान।
हरपलें मन झालें उन्मन।
मी-तू-पणाची झाली बोळवण।
एका जनार्दनीं श्रीदत्तध्यान॥
जय देव जय देव जय श्री गुरुदत्ता।
आरती ओवाळितां हरली भवचिंता ॥ जय देव जय देव ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



36. जय जय त्र्यंबकराज गिरिजानाथा

Jai Jai Tryambakaraj Aarti

जय जय त्र्यंबकराज गिरिजानाथा गंगाधरा हो।
त्रिशूलपाणी शंभो नीलग्रीवा शशिशेखरा हो।
वृषभारूढ फणिभूषण दशभुज पंचानन शंकरा हो।
विभूतिमाला जटा सुंदर गजचर्मबरधरा हो॥ ध्रु॥

पडलें गोहत्येचें पातक गौतमऋषिच्या शिरीं हो।
त्यानें तप मांडिलें ध्याना आणुनि तुज अंतरीं हो।
प्रसन्न होउनि त्यातें स्नाना दिधली गोदावरी हो।
औदुंबरमुळिं प्रगटे पावन त्रैलोक्यातें करी हो॥ जय॥ १॥

धन्य कुशावर्ताचा महिमा वाचे वर्णू किती हो।
आणिकही बहु तीर्थे गंगाद्वारादिक पर्वतीं हो।
वंदन मार्जन करिती त्यांचे महादोष नासती हो।
तुझिया दर्शनमात्रें प्राणी मुक्तीतें पावती हो॥ जय॥ २॥

ब्रह्मगिरीची भावें ज्याला प्रदक्षिणा जरि घडे हो।
तैं तैं काया कष्टे जंव जंव चरणीं रुपती खडे हो।
तंव तंव पुण्य विशेष किल्मिष अवघें त्यांचें झडे हो।
केवळ तो शिवरूप काळ त्याच्या पायां पडे हो॥ जय॥ ३॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

जय जय त्र्यंबकराज गिरिजानाथा (जारी)

लावुनियां निजभजनीं सकळहि पुरविसि मनकामना हो।
संतति संपति देसी अंतीं चुकविसि यमयातना हो।
शिव शिव नाम जपतां वाटे आनंद माझ्या मना हो।
गोसावीनंदन विसरे संसारयातना हो॥ जय जय॥ ४॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें



37. संत तुकाराम आरती

Tukaram Aarti

आरती तुकाराम। स्वामी सद्गुरु धाम॥
सच्चिदानंद मूर्ती। पाय दाखवी आम्हां ॥

राघवें सागरांत। पाषाण तारिले॥
तैसे हे तुकोबाचे। अभंग उदकीं रक्षिले॥
आरती तुकाराम। स्वामी सद्गुरु धाम॥
सच्चिदानंद मूर्ती। पाय दाखवी आम्हां ॥

तुकितां तुलनेसी। ब्रह्म तुकासी आलें॥
म्हणोनि रामेश्वरें। चरणीं मस्तक ठेविलें॥
आरती तुकाराम। स्वामी सद्गुरु धाम॥
सच्चिदानंद मूर्ती। पाय दाखवी आम्हां ॥





38. लवथवती विक्राळा

Lavthavti Vikrala Aarti

लवथवती विक्राळा ब्रह्मांडी माळा।

वीषें कंठ काळा त्रिनेत्रीं ज्वाळा।

लावण्यसुंदर मस्तकीं बाळा।

तेथुनियां जळ निर्मळ वाहे झुळझुळां॥

जय देव जय देव जय श्रीशंकरा।

आरती ओवाळूं तुज कर्पूरगौरा ॥ जय देव जय देव ॥

कर्पूरगौरा भोळा नयनीं विशाळा।

अर्धांगी पार्वती सुमनांच्या माळा।

विभुतीचें उधळण शितिकंठ नीळा।

ऐसा शंकर शोभे उमावेल्लाळा॥

जय देव जय देव जय श्रीशंकरा।

आरती ओवाळूं तुज कर्पूरगौरा ॥ जय देव जय देव ॥

देवीं दैत्यीं सागरमंथन पैं केलें।

त्यामाजीं अवचित हळाहळ जें उठिलें।

तें त्वां असुरपणें प्राशन केलें।

नीलकंठ नाम प्रसिद्ध झालें॥

जय देव जय देव जय श्रीशंकरा।

आरती ओवाळूं तुज कर्पूरगौरा ॥ जय देव जय देव ॥





आरती संग्रह

Aarti Sangrah PDF • MandirTheTemple.com

लवथवती विक्राळा (जारी)

व्याघ्रांबर फणिवरधर सुंदर मदनारी।
पंचानन मनमोहन मुनिजनसुखकारी।
शतकोटीचें बीज वाचे उच्चारी।
रघुकुळटिळक रामदासा अंतरीं॥
जय देव जय देव जय श्रीशंकरा।
आरती ओवाळूं तुज कर्पूरगौरा ॥ जय देव जय देव ॥



www.MandirTheTemple.com

Instagram: @MandirTheTemple

YouTube: @MandirTheTemple

Facebook: /MandirTheTemple



सभी PDF
QR स्कैन करें